हंसता हुआ धर्म

चंदूलाल आजकल अत्यंत दार्शनिक प्रवृत्ति के हो गए हैं और अक्सर हवाई समस्याओं को सुलझाने में निमग्न रहते हैं। एक दिन जब वे शाम के समय अपने आंगन में आरामकुर्सी पर लेटे हुए सामने वाले घर की दीवाल पर चिपके हुए कंडों पर टकटकी लगाए, विचारों में खोए थे, तभी उनकी पत्नी गुलाबो आ पहुंची और खीझ भरे स्वर में बोली : वहां क्या देख रहे हो आंखें गड़ाए? क्या उसी कलमुंही ढब्बू की पत्नी को?

चंदूलाल बोले : नहीं-नहीं। मैं तो इस समस्या का हल खोजने में लगा हूं कि आखिर ढब्बूजी की भैंस किस प्रकार दीवाल पर चढ़ कर गोबर करती है!

पत्नी ने आगबबूला होकर कहा : बस तो तुम इन्हीं उलटी-सीधी बेसिर-पैर की बातों में वक्त गंवाते रहते हो, घर की जरा फिक्र नहीं! क्या तुम्हें खबर है कि अपने छोटे मुन्ना ने एक हफ्ते से चलना शुरू कर दिया है?

चंदूलाल ने चौंककर कहा : अरे, तो तुमने पहले क्यों नहीं बताया? अब तो न जाने वह कितनी दूर निकल चुका होगा!

बस-स्टॉप पर एक बच्चे को रोता देखकर कंडक्टर ने बस रुकवाई और पूछा : बेटे, क्या हुआ?

मेरा रुपया, जिससे मैं टिकट खरीदता, खो गया।

चलो कोई बात नहीं, मैं तुम्हें फ्री में ले चलता हूं।

बस में बैठकर लड़का फिर रोने लगा तो कंडक्टर ने पूछा : भैया, अब क्या हुआ?

मेरे सत्तर पैसे कहां हैं जो रुपये में से बचते थे? बच्चे ने सिसकते हुए कहा।

मुल्ला नसरुद्दीन सौ साल का हो गया था, तो उसके घर पत्रकार आए। क्योंकि सौ साल का कोई हो जाए...उसकी तस्वीरें लीं। उससे पूछा कि नसरुद्दीन, तुम्हारी इतनी लंबी उम्र का राज क्या है?

उसने कहा : राज? न मैंने कभी शराब पी, न कभी मैंने सिगरेट पी, न मैं कभी जुआ खेला। कभी गलत सत्संग मैंने किया ही नहीं। ठीक आठ बजे सो जाना और ब्रह्ममुहूर्त में उठ आना। पांच मील रोज सुबह घूमने जाना। कुरान का पाठ करना। जीवन धर्म में लगा रहा। इसी से यह लंबी आयु मिली।

तभी बगल के कमरे में, जैसे कोई चीज गिरी, ऐसा धड़ाका हुआ। तो वे सब चौंक गए। उन्होंने कहा : क्या हुआ?

मुल्ला ने कहा : कुछ घबड़ाओ न, ये मेरे पिताजी हैं। इन्होंने लगता है फिर नौकरानी को पकड़ लिया।

उन्होंने कहा : तुम्हारे पिताजी! इनकी उम्र कितनी है?

कहा कि होगी कोई एक सौ बीस साल।

और अभी तक नौकरानी को पकड़ते हैं?

अरे, उसने कहा कि इनकी पूछो ही मत। जब पी लेते हैं तो फिर इन्हें कुछ होश नहीं कि कौन नौकरानी है, कौन क्या है।

वे तो कहे कि यह बड़ी चमत्कार की बात है कि तुम्हारे पिता एक सौ बीस साल के हैं, और तुम सौ साल के!

अरे, उसने कहा : यह कुछ भी नहीं है। मेरे दादा भी अभी जिंदा हैं।

वे कहां हैं? पत्रकारों ने पूछा : उनके हम दर्शन करना चाहते हैं। उनकी उम्र क्या है?

होगी कोई एक सौ चालीस साल।

कहा : तो वे हैं कहां?

उसने कहा कि वे जरा बारात में गए हैं।

किसकी बारात में?

खुद की बारात में।

क्या इस उम्र में विवाह कर रहे हैं?

नसरुद्दीन ने कहा : कर नहीं रहे हैं, करना पड़ा रहा है! वह स्त्री गर्भवती हो गई।

एक पादरी है जीसस का। उसने बाइबिल में पढ़ा है कि दुश्मन एक गाल पर चांटा मारे तो दूसरा गाल सामने कर दो। दुश्मन किसके नहीं हैं? एक दुश्मन ने उसको चांटा मारा। और दुश्मन ने चांटा इसलिए मारा कि दुश्मन ने उसी दिन चर्च में उसका भाषण सुना था। और चर्च के भाषण में उसने कहा था कि जीसस कहते हैं कि जो तुम्हारे बायें गाल पर चांटा मारे तो दांया गाल सामने कर दो!

चर्च के बाहर वह पादरी निकला तो दुश्मन ने उसके बायें गाल पर जोर से चांटा मारा! भीड़ इकट्ठी थी, पादरी एकदम से गड़बड़ भी नहीं कर सकता था, क्योंकि अभी चर्च के भीतर से आया था। और कहा था कि दायां गाल सामने कर दो तो पादरी ने दायां गाल सामने कर दिया! उसने उस पर भी एक करारा चांटा मारा तब पादरी ने उठाकर लकड़ी, उसका सिर फोड़ दिया! तब उस आदमी ने कहा, यह तुम क्या कर रहे हो।

पादरी ने कहा कि जीसस ने कहा है कि बायें गाल पर कोई मारे तो दायां सामने करो। लेकिन दायें पर कोई मारे तो कुछ भी करने को नहीं कहा है! दायें पर कोई मारे तो निर्णय हम करेंगे!

— ओशो पुस्तकों से संकलित